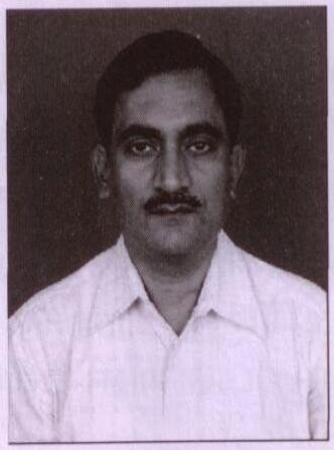

शिक्षा व्यवस्था में मूल्यपरकता लाने की जरूरत

❑

प्रो. कृष्ण कुमार मिश्र

शिक्षा में मूल्यों का समावेश हो इस पर हमेशा बात होती रहती है। इसी पर गांधी, टैगोर और गिजुभाई का हवाला देते हुए प्रो. कृष्णकुमार मिश्र इसकी जरूरत पर नये सिरे से दृष्टि डाल रहे हैं। ❑ सं.

भारत में शिक्षा मूल्यपरक होनी चाहिए। विशेषकर के स्कूली शिक्षा को मूल्यों से जोड़ा जाना चाहिए। इसे नैतिक शिक्षा से जोड़ने की जरूरत है। शिक्षा एक संपूर्ण, सनातन तथा चिरंतन प्रक्रिया है। आज शिक्षा, खास करके स्कूली शिक्षा का हमारा वर्तमान परिदृश्य निराशाजनक है। हमारी शिक्षा आज जड़ों से कटकर निर्मूल हो गयी है तथा मूल्यों के निरंतर क्षरण से मूल्यहीन भी होती जा रही है। इसलिए शिक्षा को मूल्यपरक बनाने की वकालत बार-बार की जाती है। शिक्षा व्यक्ति के निर्माण की ऐसी प्रक्रिया है जो नैसर्गिक तथा सतत है। वह व्यक्ति के मानवीय गुणों को पोषित तथा संवर्द्धित करती है। शिक्षा मानव तथा समाज की निर्मात्री है। शिक्षा व्यक्ति को विनम्र बनाती है- 'विद्या ददाति विनयम्'। यह व्यक्ति को उदारमना बनाती है। इसीलिए कहा गया है- 'उदारचरितानाम तु वसुधैव कुटुबंकम्'। अर्थात उदार व्यक्ति के लिए संपूर्ण भूमंडल एक कुटुंब सदृश है। उदारता भारत की उदात चिंतन परंपरा शिक्षा व्यवस्था का एक अहम् मूल्य रहा है। लेकिन गुलामी तथा थोपी हुई मैकाले की शिक्षा व्यवस्था ने भारतीय शैक्षिक मूल्यों का निरंतर क्षरण किया है तथा शिक्षा को पतनोन्मुख बनाया है।

भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली

प्राचीन काल में भारत में शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली थी। इसमें विद्यार्थी गुरु के पास आश्रम में ही रहता था। वह गुरुकुल यानी परिवार का अंग था। इससे गुरु-शिष्य के बीच जो मानवीय संबंध बनता था वह मूल्यों से संपृक्त तथा संपुष्ट होता था। गुरु अपने शिष्यों को संस्कृत, वेद, शास्त्र, गणित तथा तत्वमीमांसा सिखाता था। गुरुकुल में छात्र व्यावहारिक जगत का भी ज्ञान प्राप्त करता था जिससे वह गृहस्थ जीवन में अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का समुचित निर्वहन कर सके। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में नैतिक, आध्यात्मिक, शारीरिक और चारित्रिक विकास पर जोर दिया जाता था। मूल्य शिक्षा यानी वह शिक्षा जो चरित्र और सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करे। मूल्य शिक्षा स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, जेलों और स्वैच्छिक युवा संगठनों में दी जा सकती है।

औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली का कर्ताधर्ता लॉर्ड मैकाले था जिसने १८३० के दशक में हिन्दुस्तान के लिए शिक्षानीति तय की थी। वह ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के ऊपरी सदन का सदस्य था। दरअसल मैकाले को भारत में अंग्रेजी शासन को मजबूत बनाने के लिए आवश्यक नीतियां सुझाने का कार्य सौंपा गया था। भारतीय समाज की एकता को नष्ट करने तथा उसकी सामाजिक संस्कृति को चोट पहुंचाने के लिए मैकाले ने एक शिक्षा प्रणाली निर्धारित की। अंग्रेजों की इस शिक्षा नीति का लक्ष्य था देश में स्वदेशी भाषाओं की प्रतिष्ठा को खंडित करके अंग्रेजी का प्रभुत्व स्थापित करना। इसके साथ

सरकार चलाने के लिए एक ऐसे वर्ग का निर्माण करना जो वर्ण से हिन्दुस्तानी हो लेकिन मन से अंग्रेज हो। इसके अलावा पश्चिमी रहन-सहन, खानपान तथा जीवन पद्धति को श्रेष्ठ साबित करना तथा उसके प्रति भारतीयों के मन में ललक पैदा करना भी इस व्यवस्था का अभीष्ट था। आजादी के ६८ साल बाद आज भी मैकाले की शिक्षा प्रणाली ही किसी न किसी रूप में चल रही है। गुरु-शिष्य के बीच का संबंध टूट चुका है। शिक्षा आज एक उद्योग का रूप ले चुकी है। इसमें समाज तथा राष्ट्र सेवा का भाव काफूर हो चुका है। उसका स्थान मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति ने ले लिया है। वर्तमान शिक्षा विद्यार्थी को पतनोन्मुख बना रही है।

मूल्यपरकता के अभाव में आज का शिक्षित वर्ग जीवन के चिरलक्षित तथा सुविचारित पथ से विचलित होता जा रहा है। समाज को बेहतर बनाने और राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाने के लिए आज मूल्य शिक्षा की विशेष आवश्यकता है। मूल्यपरक शिक्षा ही व्यक्ति को मानवीय गुणों तथा मूल्यों से ओतप्रोत करती है। मानवीय मूल्यों के ह्रास का परिणाम है पारिवारिक तथा सामाजिक विघटन। इसलिए मूल्यपरक शिक्षा की बात को देश के तमाम शिक्षाविद् तथा समाजशास्त्री बारंबरार दुहराते रहे हैं। यह खेदजनक तथा विडंबना पूर्ण है कि आजादी के इतने वर्ष बाद हम आज भी शिक्षा के औपनिवेशिक बोझ को ढोते चले जा रहे हैं।

मूल्यपरक शिक्षा-भारतीय चिंतकों के विचार

शिक्षा में मूल्यों की वकालत टैगोर, विवेकानंद, गांधी से लेकर विनोबा तथा गिजुभाई करते रहे हैं। गिजुभाई ने शिक्षा की जकड़न को दूर करके इसे बालकेंद्रित तथा आनंददायी बनाने के लिए बहुत काम किया। शिक्षा से संबंधित अपने प्रयोगों तथा विचारों

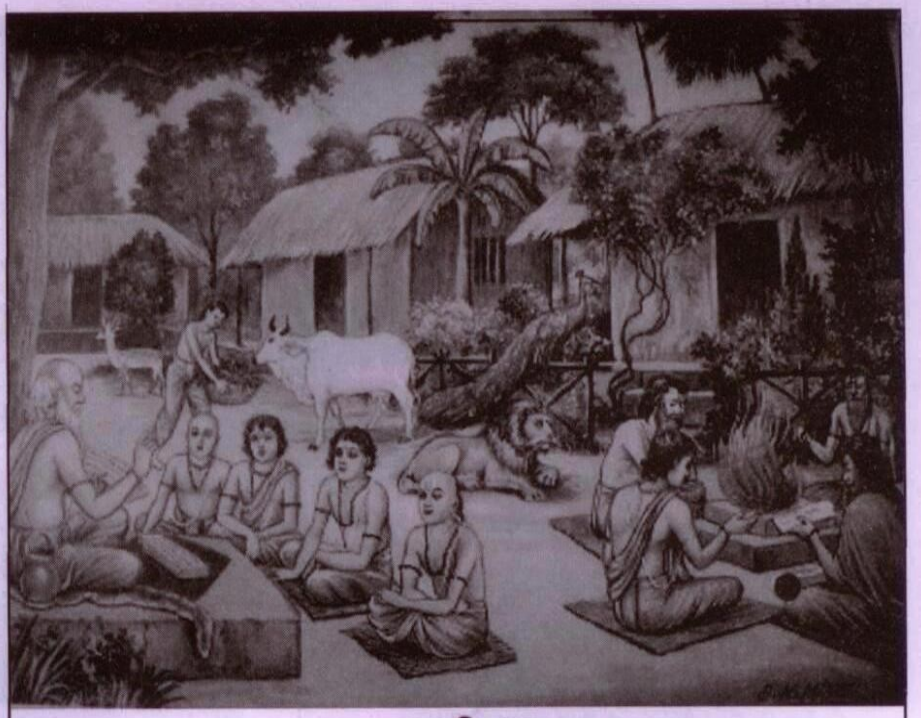

गुरुकुल की कक्षा

को उन्होंने १९३९ में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'दिवास्वप्न' में व्यक्त किया। उनके द्वारा उठाई गई शैक्षिक समस्याएं तथा मुद्दे आज भी उतने ही प्रासंगिक तथा विचारणीय हैं। गिजुभाई शिक्षा को केवल कक्षाओं तक ही सीमित रखने का विरोध करते थे। वे उसे जीवन से जोड़ने तथा व्यावहारिक बनाने के पक्षधर थे। लेकिन अफसोस ! आज भी शिक्षकों के पास नवाचारों को प्रयोग में लाने तथा नवीन पद्धतियों को अजमाने की आजादी नहीं है।

शिक्षा के संबंध में महात्मा गांधी की बुनियादी तालीम मूल्यों तथा आत्म निर्भरता की समर्थक है। गांधीजी कहते थे -'मैंने हृदय की शिक्षा को अर्थात चरित्र के विकास को हमेशा पहला स्थान दिया है। इसे शिक्षा की बुनियाद माना है। यदि बुनियाद पक्की है तो अवसर मिलने पर बालक दूसरी बातें किसी की सहायता से या अपनी ताकत से खुद जान सकते हैं।' गांधीजी कहते थे कि शिक्षा का सही अर्थ बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा से सर्वश्रेष्ठ बाहर निकालना है। गांधीजी की शिक्षा संबंधी अवधारणा सदाचार और नैतिक ज्ञान पर केन्द्रित है। इन दोनों के अभाव में किसी भी शिक्षा को संपूर्ण और व्यापक नहीं कहा जा सकता। सदाचार और नैतिकता के बिना कोई छात्र शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं हो सकता। शिक्षा के विषय पर विनोबा भावे जी ने कहा था कि छात्रों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि आगे बढ़कर वह खुद ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बने। इसे जीवन-ज्ञान कहते हैं। ऐसा जीवन-ज्ञान किसी स्कूल में नहीं बल्कि वास्तविक जीवन से ही पाया जाता है। स्कूल का कार्य अपने विद्यार्थियों में जीवन से सीखने की शक्ति को जगाना है।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है कि किताबी शिक्षा की तुलना में वास्तविक जीवन को जानना ही सच्ची शिक्षा है। यह ज्ञान प्राप्ति को बढ़ावा देता है । और जिज्ञासा को भी विकसित करता है। कोई कक्षा शिक्षण इसका मुकाबला नहीं कर सकती। नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा को आत्मानुशासन, सहनशीलता, शिष्टाचार और आंतरिक स्वतंत्रता जैसे नैतिक और

आध्यात्मिक गुणों के लिए सदैव प्रयत्नशील होना चाहिए। इसलिए उन्होंने स्कूल के दैनिक जीवन में संगीत, साहित्य, कला, नृत्य, नाटक को प्रमुखता दी। टैगोर की शिक्षा प्रणाली बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक, और आध्यात्मिक पहलुओं पर जोर देती है। टैगोर के शैक्षिक सिद्धांत को शांति निकेतन में स्थान दिया गया। मूल्यपरक शिक्षा के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'सेंटर फॉर ह्यूमन वैल्यूज' की भी शुरुआत की थी।

शिक्षा का सर्वांगीण दर्शन

राष्ट्रीय तथा सामाजिक उन्नति के लिए बौद्धिक विकास से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है चारित्रिक विकास। मात्र औद्योगिक प्रगति से भी कोई देश खुशहाल, समृद्ध और गौरवशाली नहीं बन जाता। अत: युवाओं का चरित्र निर्माण करना स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों का एक प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। वर्तमान शिक्षा को सार्थक और मूल्य आधारित बनाने की जरूरत है। इसके लिए भारतीय पद्धति से आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए। साथ ही गुरु एवं शिष्य के बीच भावनात्मक संबंधों के निर्माण पर जोर दिया जाना चाहिए। शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक के महत्त्व को बढ़ाने की आवश्यकता है तथा प्रबन्ध-तंत्र के खेदजनक वर्चस्व को न्यूनतम करने की जरूरत है। उच्च-शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने के लिए आर्थिक दबाव को कम करना होगा। इसके अलावा चरित्र निर्माण के लिए विशेष पाठ्यक्रम की आवश्यकता है। शिक्षा के पेशेवर तथा यांत्रिक होते जाने से आज डॉक्टर, इंजीनियर, प्रबन्धक जैसे कलपुर्जों का निर्माण तो हो रहा है लेकिन मानव का समुचित निर्माण नहीं हो पा रहा है। मानवीय चरित्र निर्माण के साथ नागरिकों में अपने राष्ट्र, संस्कृति, भाषा, वेशभूषा के प्रति स्वाभिमान एवं गौरव का भी विकास होना चाहिए। पढ़ाई में नैतिक शिक्षा को शामिल करके छात्रों में मूल्यों के प्रति लगाव पैदा किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता है।

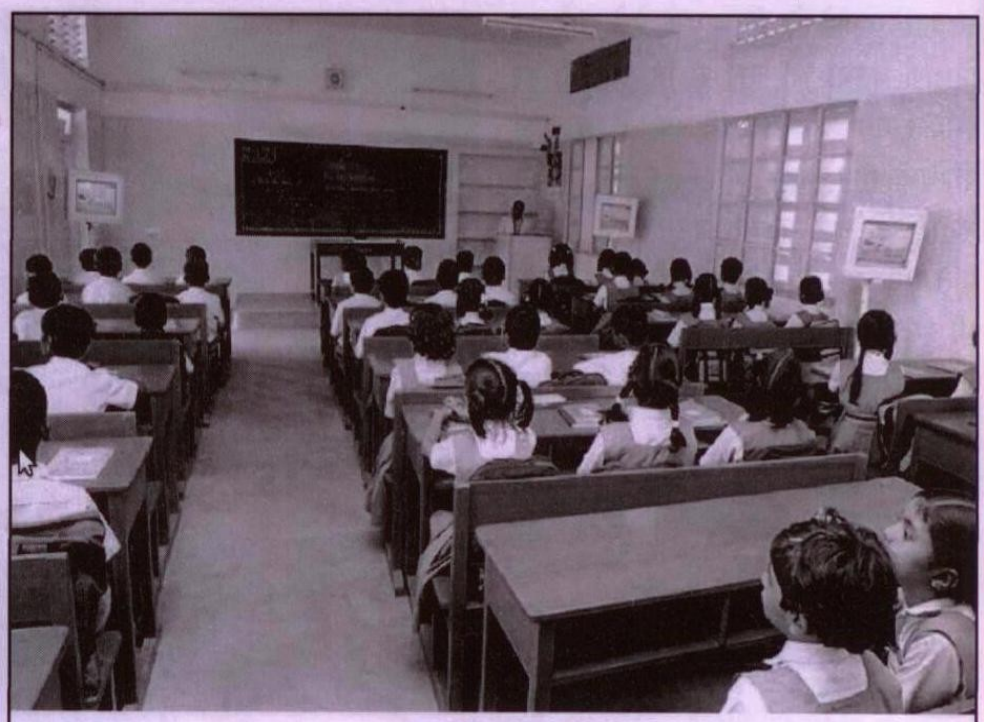

आधुनिक कक्षा

स्वांतत्र्योर नीतियां

सन् १९६४ में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने देश में व्यापक शैक्षिक सुधारों के लिए नीति तथा नियम सुझाने हेतु एक आयोग का गठन किया जिसके अध्यक्ष थे डॉ. दौलत सिंह कोठारी। इस आयोग को हम प्राय: 'कोठारी आयोग' के नाम से जानते हैं। आयोग ने अपनी संस्तुतियों में कहा कि -नैतिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना पर जोर देना आवश्यक है। स्कूलों को यह दायित्व निभाना चाहिए जिससे अध्ययनरत युवा समय के साथ स्कूल की दुनिया से वास्तविक जीवन तथा कार्य की दुनिया के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझें तथा उसमें योगदान दें। मूल्य शिक्षा के इस मुद्दे को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-१९८६ में राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह नीति कहती है कि 'जीवनावश्यक मूल्यों के क्षरण पर बढ़ती चिंता, पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता को अपरिहार्य बनाती है।'

निष्कर्ष

महात्मा गांधी शैक्षिक मूल्यों में यकीन करने वाले इंसान थे। उनकी दृष्टि में जीवन में साफ-सफाई भी एक अहम् मूल्य है। गांधी जी स्वच्छता में ही ईश्वर का रूप देखते थे। शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिए साफ-सफाई जीवन के लिए नितांत जरूरी है। इसलिए वर्तमान सरकार भी इस पर काफी बल दे रही है। पहली बार राष्ट्रीय स्तर पर स्वच्छता को एक मिशन के तौर पर लिया गया है तथा उसके लिए हर स्तर पर हर संभव प्रयास किया जा रहा है। इससे आने वाले दिनों में हमारे सामाजिक जीवन में एक युगान्तकारी बदलाव आएगा। जाहिर है, शिक्षा का परिदृश्य भी इससे अछूता नहीं रहेगा। उपरोक्त बातों के आलोक में यह स्पष्ट है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यपरकता परम् आवश्यक है। ❑

होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र, टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, वी.एन.पुरव मार्ग, मानखुर्द, मुंबई-४०००८८
मो.नं. - ९८६७२१०७५५